

जैविक खेती और उसके फायदे

मोनिका*

लेक्चरर (उद्यान विज्ञान), क्वांटम यूनिवर्सिटी, रूड़की, हरिद्वार

*E-mail: thakurmonika041@gmail.com

आज के युग में जहाँ रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का उपयोग बड़े पैमाने पर होता जा रहा है, वहाँ जैविक खेती ने किसानों, उपभोक्ताओं और पर्यावरणविदों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। जैविक खेती प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए, रासायनिक पदार्थों के बिना फसलों का उत्पादन करने की प्रणाली है। यह खेती न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी है।

जैविक खेती का अर्थ

जैविक खेती वह कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और जीवाणुरहित संश्लेषित पदार्थों का उपयोग नहीं किया जाता। इसके स्थान पर, प्राकृतिक उर्वरक, जैविक खाद, हरित खाद और कीट नियंत्रण के प्राकृतिक उपायों का उपयोग किया जाता है। इस पद्धति में मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बनाए रखना, जल संरक्षण, जैव विविधता को बढ़ावा देना और स्थायी कृषि को बढ़ावा देना मुख्य उद्देश्य हैं।

जैविक खेती के प्रमुख तत्व

- प्राकृतिक उर्वरक का प्रयोग:** गोबर, खाद, कंपोस्ट, हरी खाद और जैविक अवशेष मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होते हैं।
- कीट और रोग प्रबंधन:** प्राकृतिक और जैविक उपायों से फसलों को कीट और रोगों से बचाया जाता है, जैसे नीम के अर्क, हरी राख और जिवानु आधारित उत्पाद।
- बीज और फसल चयन:** जैविक खेती में स्थानीय और रोग प्रतिरोधक किस्मों का चयन किया जाता है।



- मिट्टी प्रबंधन:** फसल चक्रण, गहरी जुताई और हरी खाद का उपयोग मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए किया जाता है।
- जल संरक्षण:** वर्षा जल संचयन, ड्रिप इरिगेशन और मल्लिचिंग जैसी तकनीकों से जल की बचत की जाती है।

जैविक खेती के लाभ

- स्वास्थ्य के लिए लाभकारी:** रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक से मुक्त फसलें मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित होती हैं। जैविक सब्जियाँ, फल और अनाज पोषण तत्वों से भरपूर होते हैं और शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।
- मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि:** जैविक खाद और हरित खाद मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाते हैं। यह मिट्टी को उपजाऊ बनाता है और लंबे समय तक फसल उत्पादन की क्षमता बनाए रखता है।
- पर्यावरण संरक्षण:** रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक मिट्टी, जल और वायु को प्रदूषित करते हैं। जैविक खेती से यह प्रदूषण कम होता है और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है।
- जैव विविधता को बढ़ावा:** जैविक खेती में विभिन्न फसलों और पौधों का मिश्रण किया जाता है, जिससे कृषि भूमि पर कीटों और पक्षियों की जैव विविधता बढ़ती है।
- कृषक की आर्थिक स्थिति में सुधार:** जैविक फसलें बाजार में अधिक मूल्य पर बिकती हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जैविक उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।
- स्थायी कृषि प्रणाली का विकास:** जैविक खेती प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करती है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए खेती की क्षमता बनाए रखती है।

जैविक खेती की चुनौतियाँ

- प्रारंभिक निवेश अधिक:** जैविक खेती शुरू करने के लिए जैविक खाद, प्राकृतिक कीटनाशक और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
- उत्पादन में समय:** रासायनिक खेती की तुलना में जैविक फसल तैयार होने में अधिक समय लगता है।
- मार्केटिंग की समस्या:** छोटे किसानों के लिए जैविक उत्पादों की सही कीमत और बिक्री चैनल प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- प्रमाणीकरण की प्रक्रिया:** जैविक उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रमाणित करना होता है, जो प्रक्रिया समय लेने वाली और महंगी हो सकती है।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के उपाय

1. किसानों को जैविक खेती के प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम उपलब्ध कराना।
2. जैविक खाद और प्राकृतिक कीटनाशक की सुलभता बढ़ाना।
3. स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में जैविक उत्पादों के लिए उचित मूल्य और विपणन नेटवर्क विकसित करना।
4. सरकारी सब्सिडी और प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ उठाना।

भारत में जैविक खेती का परिदृश्य

भारत में जैविक खेती की शुरुआत पिछले दो दशकों में तेजी से हुई है। वर्तमान में लगभग 3.5 लाख हेक्टेयर भूमि पर जैविक खेती की जाती है। भारत सरकार की राष्ट्रीय जैविक खेती मिशन इस क्षेत्र को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रमुख जैविक उत्पादों में आलू, प्याज, टमाटर, आम, आमला और विभिन्न फूल शामिल हैं।

जैविक खेती: वर्तमान सांख्यिकी (भारत एवं विश्व):

तालिका 1: भारत में जैविक खेती की स्थिति

वर्ष / अवधि	जैविक प्रमाणित भूमि (हेक्टेयर)	जैविक परिवर्तनाधीन भूमि
मार्च 2020	27,80,000 हेक्टेयर (≈2.78 मिलियन)	-
मार्च 2024	17,64,677 हेक्टेयर (प्रमाणित)	36,27,115 हेक्टेयर (conversion)
वर्ष 2023-24	6,12,816 हेक्टेयर (प्रमाणित)	5,35,420 हेक्टेयर (conversion)
FY 2024 (सर्टिफाइड उत्पादन)	-	-

नोट: “परिवर्तनाधीन भूमि” से अभिप्रेत है वह भूमि जो अभी जैविक प्रक्रिया में है (रासायनिक खेती से जैविक प्रणाली में आ रही है)।

तालिका 2: विश्व स्तर पर जैविक खेती की स्थिति

वर्ष / अवधि	जैविक कृषि भूमि (हेक्टेयर)	टिप्पणी
2023	98.9 मिलियन हेक्टेयर	वैश्विक जैविक कृषि की स्थिति
2020	98.9 मिलियन	वैश्विक जैविक भूमि में लगातार वृद्धि
2023 (देशों के अनुसार)	भारत: ~ 4.5 मिलियन हेक्टेयर	भारत विश्व में तीसरे स्थान पर जैविक कृषि भूमि के अनुसार

कुछ अन्य संबंधित आंकड़े

- भारत में कुल कृषि योग्य भूमि का लगभग 42.8% हिस्सा बोर्ड जाने योग्य है।
- भारत में जैविक खेती बाजार का आकार 2024 में लगभग USD 5,555.87 मिलियन था।
- जैविक खेती में फाइबर (कपास), तेलबीन, अनाज और मसालों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

- अधिकांश प्रमाणित जैविक क्षेत्र कुछ चुनिंदा राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान में केंद्रित हैं। वैश्विक रूप से, 2023 में जैविक कृषि क्षेत्र में 2.5 मिलियन हेक्टेयर की वृद्धि हुई।

निष्कर्ष

जैविक खेती न केवल किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, मानव स्वास्थ्य और स्थायी कृषि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैविक खेती को अपनाकर हम अपने खाद्य तंत्र को स्वच्छ, सुरक्षित और टिकाऊ बना सकते हैं। भविष्य में जैविक खेती की मांग और महत्व और बढ़ेगा, जिससे किसानों, उपभोक्ताओं और पर्यावरण को लाभ होगा।

